

# आगरा जिले में महिलाओं की सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा उपलब्ध कराई गई चुनौतियाँ

Sunita Singh\*

Department of Sociology, Swami Vivekananda University, Sagar (MP)

सार – संगठित क्षेत्र में, 31 मार्च, 2003 को महिला श्रमिकों ने 18.4 का गठन किया, जिसमें से लगभग 49.68 लाख महिलाएँ निजी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। वास्तव में, “सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं की ये सबसे बड़ी संख्या है। भारतीय महिला आईटी पेशेवरों की घटना” आईटी/बीपीओ उद्योग में महिलाओं की भारी वृद्धि का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। आईटी कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को उद्योग की निरंतर वृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण सक्षम कारक के रूप में देखा जाता है

-----X-----

## प्रस्तावना

यूनिक चैलेंज का सामना सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री में महिला प्रोफेशनल्स का यूनिक चैलेंज का सामना

सॉफ्टवेयर सेवा उद्योग की विशेषता और कार्य की प्रकृति उद्योग में पेशेवरों के लिए कुछ अनूठी चुनौतियों का सामना करती है। उद्योग में महिला पेशेवरों के मामले में चुनौतियाँ बढ़ी हैं। सॉफ्टवेयर पेशेवरों को लंबे समय तक काम करने के लिए परिणामी दबावों के साथ अनिश्चितता और अस्थिरता के वातावरण का सामना करना पड़ता है।

इसके अलावा, एक 24 घंटे ज्ञान कारखाने की अवधारणा, 24.7.365 हेल्प डेस्क सहायता के विकास के लिए सॉफ्टवेयर इंजीनियरों को टीम मीटिंग और वर्चुअल वर्क सेशन आयोजित करने की आवश्यकता होती है, जहाँ टीम के सदस्यों को लौकिक लचीलापन, दृष्टिकोण के लिए अधिक तरल समय अपनाने की आवश्यकता होती है, चाहे पारंपरिक 8 से 6 कार्यदिवस के बाहर कॉन्फ्रेंस कॉल आयोजित करना या किसी सॉफ्टवेयर प्रोजेक्ट पर तेजी से नज़र रखना पारियों में करना हो।

प्रौद्योगिकी के तेजी से परिवर्तन के साथ उद्योग की परियोजना अभिविन्यास जो कौशल को जल्दी से अप्रचलित बनाता है, उसे पुनः कौशल के लिए सॉफ्टवेयर पेशेवरों की आवश्यकता होती है। नतीजतन, सॉफ्टवेयर पेशेवरों को इन परिवर्तनों के साथ बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रशिक्षण और शैक्षिक घंटे लगाने की आवश्यकता होती है।

तिरुवल्लूर जिले में आईसीटी के माध्यम से महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ

तिरुवल्लूर जिले में विभिन्न स्तरों पर महिला कर्मचारियों के बीच विभिन्न आईटी कंपनी ने 300 उत्तरदाताओं का नमूना लिया। ये विभिन्न आयु समूहों, लिंग, शैक्षिक, धर्म और आय श्रेणियों से हैं। इस शोध के अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक नमूने का उपयोग किया गया है, उत्तरपक्ष की भागीदारी और प्रतिक्रिया के माध्यम से, अध्ययन के क्षेत्र में निम्नलिखित निष्कर्षों और विश्लेषणों के आधार पर पहचान की गई थी।

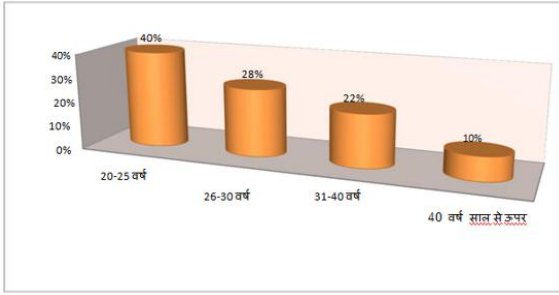
तालिका 1.1: उत्तरदाताओं की आयु

	उम्र	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	20-25 वर्ष	120	40%
	26-30 वर्ष	85	28%
	31-40 वर्ष	65	22%
	40 साल से ऊपर	30	10%
	कुल	300	100.0

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिका मूल्यांकन करती है कि: फोर पॉइंट स्केल के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली आईटी महिलाओं के बीच उत्तरदाताओं की आयु के लिए आवृत्ति और वितरण, 120 उत्तरदाता 20-25 वर्ष की आयु में थे, 85 उत्तरदाता विज्ञापन 26-30 वर्ष की आयु समूह में थे।, 65

उत्तरदाता वर्ष आयु वर्ग के थे और 30 उत्तरदाता 40 वर्ष से अधिक आयु के थे।



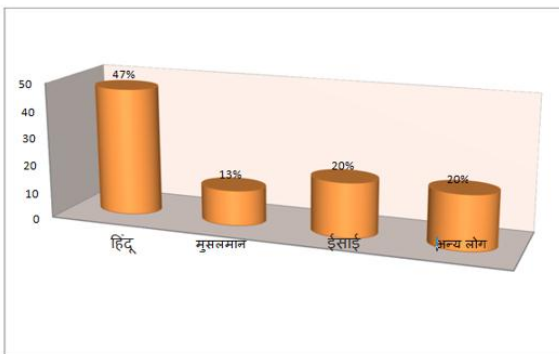
चार्ट 1.1: उत्तरदाताओं की आयु

तालिका 1.2: उत्तरदाताओं की धर्म

	धर्म	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	हिंदू	140	47
	मुसलमान	40	13
	ईसाई	60	20
	अन्य लोग	60	20
	संपूर्ण	300	100

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिका बताती है कि फोर पॉइंट स्केल: के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली आईटी महिलाओं के बीच उत्तरदाताओं के धर्म की आवृत्ति और वितरण, 140 उत्तरदाता हिंदू के थे, 40 उत्तरदाता मुस्लिम के थे, 60 उत्तरदाता थे। ईसाई और 60 उत्तरदाता दूसरे धर्म के हैं।



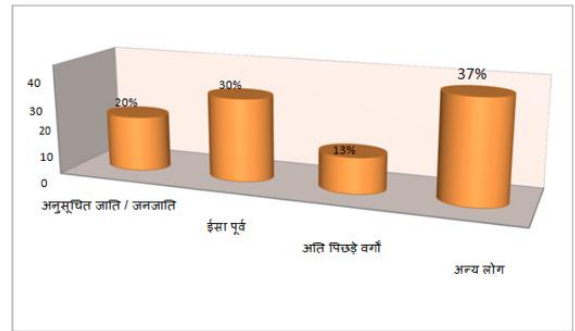
1.2 चार्ट: उत्तरदाताओं का धर्म

तालिका 1.3: उत्तरदाताओं का समुदाय

	समुदाय	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	अनुसूचित जाति / जनजाति	80	20
	ईसा पूर्व	110	30
	अति पिछड़े वर्गों	45	13
	अन्य लोग	65	37
	संपूर्ण	300	100

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिका बताती है कि: फोर पॉइंट स्केल: के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली आईटी महिलाओं के बीच उत्तरदाताओं के समुदाय में आवृत्ति और वितरण, 80 उत्तरदाता अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के थे, 110 उत्तरदाता पिछड़े वर्ग के थे।, 45 उत्तरदाता अधिकांश पिछड़े वर्ग के थे और 65 उत्तरदाता अन्य समुदायों के थे।



चार्ट 1.3: उत्तरदाताओं का समुदाय

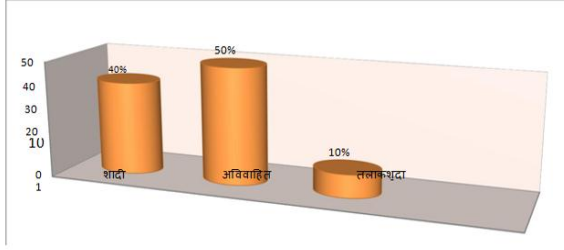
तालिका 1.4: उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

	वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	शादी	120	40
	अविवाहित	150	50
		30	10
	तलाकशुदा	300	100

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिका में बताया गया है कि: श्री पॉइंट स्केल: के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली आईटी महिलाओं के बीच उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति की आवृत्ति और वितरण, 120 उत्तरदाताओं का विवाह हुआ, 150 उत्तरदाता अविवाहित थे और 30 उत्तरदाताओं का तलाक हो गया था

चार्ट 1.4: उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति



निम्नलिखित जानकारी का विश्लेषण किया गया कि आगरा जिले (तमिलनाडु) में अच्छी तरह से शिक्षित उच्च कुशल महिला सॉफ्टवेयर पेशेवरों ने तेजी से विकास किया है और एक बहुत ही मांग क्षेत्र है जिसमें वे करियर बनाना चाहते हैं। आईटी उद्योग की प्रकृति और तथ्य यह है कि महिला सॉफ्टवेयर पेशेवर 28-38 साल के जीवन में महत्वपूर्ण चरण में हैं, जहां महिलाओं को शादी और मातृत्व में खींचा जाता है, काम के जीवन के संतुलन को बनाए रखने के लिए दबाव बढ़ाता है। यह स्पष्ट है कि सेक्टर की प्रकृति और बदलती आकांक्षाएं और आगरा जिले में काम करने वाली महिलाओं की भूमिकाएं उनके काम और परिवार के लिए चुनौतियां पैदा करती हैं, जो अध्ययन आगे की जांच के तहत रखती हैं। यह अध्ययन उन कारकों का पता लगाने, दस्तावेज़ बनाने और उनका विश्लेषण करने के लिए डिज़ाइन किया गया था जो सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से चुनौतियों का सामना करने वाले सॉफ्टवेयर पेशेवरों को प्रभावित करते हैं और उनके पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन दोनों में प्राप्त समर्थन को समझने के लिए भी।

### अध्ययन की खोज

वर्तमान शोध अध्ययन ने निम्नलिखित मुख्य उद्देश्यों को पूरा किया है;

1. आगरा जिले में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक विकास
2. आगरा जिले में प्रशासनिक और राजनीतिक महिला विकास के स्तर को उजागर करना
3. आगरा जिले में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पुरुषों और महिलाओं के बीच लैंगिक समानता का मूल्यांकन करना
4. आगरा जिले में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों का प्रदर्शन

5. महिलाओं को सूचना प्रौद्योगिकी में काम करने वाली चुनौतियों का सामना करना।

आगरा में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से समृद्ध महिला सशक्तिकरण का विश्लेषण करने के लिए - तिरुवल्लुर जिले का एक अध्ययन। पूरी तरह से 450 नमूनों को अध्ययन क्षेत्र से लिया गया था, जिसमें से 150 नमूनों को आगराजिले के स्थानीय निकाय संस्थानों से सरल यादृच्छिक नमूना विधि के आधार पर बेतरतीब ढंग से चुना गया था।

- ▶ जैसा कि अध्ययन से पता चलता है कि उत्तरदाताओं के 4 प्रतिशत आईटीयोजनाओं के बारे में जानते थे। लगभग 26.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं को आईटीयोजनाओं के बारे में पता नहीं था। लगभग 58 प्रतिशत उत्तरदाता आंशिक रूप से जागरूक थे और 11.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को आईटीयोजनाओं के बारे में पता नहीं था।
- ▶ यह अध्ययन से देखा जा सकता है कि लगभग 2.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सशक्त बनाया गया था, 23.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सशक्त नहीं किया गया था, 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं को आंशिक रूप से सशक्त किया गया था और 7.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को यह विचार नहीं था कि वे सशक्त थे या नहीं।
- ▶ अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कुल नमूने का 17.3 प्रतिशत सामाजिक रूप से सशक्त था। कुल नमूने का लगभग 43.3 प्रतिशत आर्थिक रूप से सशक्त था, कुल नमूने का 37.3 प्रतिशत शैक्षिक रूप से सशक्त था और कुल नमूने का 2.0 प्रतिशत राजनीतिक रूप से सशक्त था।
- ▶ अध्ययन से पता चलता है कि कार्य वातावरण में आईटीका उपयोग करके 14.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं पर सहमति व्यक्त की गई थी जिससे उनका जीवन आसान हो गया है। उत्तरदाताओं की अच्छी संख्या 40.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कार्य वातावरण में आईटीका उपयोग करके दृढ़ता से सहमति व्यक्त की थी। उनके जीवन को आसान बना दिया है, उत्तरदाताओं के 6 और 39.3 प्रतिशत असहमत थे और काम के माहौल में आईटीका उपयोग करके दृढ़ता से असहमत थे, उनके जीवन को क्रमशः आसान नहीं बनाया है।

- ▶ अध्ययन से संकेत मिलता है कि लगभग 22 प्रतिशत उत्तरदाता अपने कार्यस्थल में आईटीसुविधा से अत्यधिक संतुष्ट थे। लगभग 30 प्रतिशत उत्तरदाता अपने कार्यस्थल में आईटीसुविधा से संतुष्ट थे। जबकि 20 और 28 प्रतिशत उत्तरदाता अपने कार्यस्थल में क्रमशः आईटीसुविधा से अत्यधिक असंतुष्ट और असंतुष्ट थे।
- ▶ अध्ययन से पता चलता है कि लगभग 27.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सूचित किया गया कि आईटीसार्वजनिक सेवाओं की डिलीवरी में सुधार करेगा, 36.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सूचित किया गया कि आईटीस्थानीय निकाय संस्थानों के पदाधिकारियों का निर्माण करने में मदद करेगा, उत्तरदाताओं के 15.3 प्रतिशत रिपोर्ट किए गए थे कि आईटीनीतियों, नियमों और विनियमन के बारे में जानकारी प्रदान करेगा और 20.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सूचित किया गया था कि आईटीगाँव की बैठक में भाग लेने के लिए मदद करता है जो दूर स्थित हैं।
- ▶ इस अध्ययन से देखा जा सकता है कि बहुमत अर्थात 61.3 प्रतिशत को टेलीविजन से स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जानकारी के बारे में जानकारी मिल रही थी, 26 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इंटरनेट, 4 और से स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जानकारी के बारे में जानकारी मिल रही थी। 8.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं को क्रमशः रेडियो और प्रिंट मीडिया से स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जानकारी के बारे में जानकारी मिल रही थी।

### उपसंहार

महिलाएं उत्पादों और प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदान किए गए फायदों के समान लाभार्थियों हैं, जो प्रौद्योगिकी के उपयोग के उपज हैं। हालांकि, यह समाज के एक विशिष्ट समूह तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि भारतीय समाज में महिलाओं के अन्य हिस्सों में जाना चाहिए। यह अध्ययन महिलाओं के सामाजिक स्वतंत्रता और अध्ययन क्षेत्र में अवसरों के लिए उपलब्ध बुनियादी ढांचे (सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, आदि) के बारे में जानना चाहता था। प्रयोज्यता महिलाओं के बीच डिजिटल विभाजन को रोकने और आईटीउपयोग के साथ महिलाओं के लिए अधिक सशक्तिकरण के लिए सरकारी हस्तक्षेप को आमंत्रित कर सकती है। मीडिया

के विकास में कहीं ज्यादा योगदान करने के लिए हर जगह मीडिया के लिए संभावित क्षमता मौजूद है। औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्र दोनों में व्यापार, शासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, शिल्प और रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में सुधार करने के लिए आईटीके लिए कई संभावनाएं हैं। आईटीकार्य परिस्थितियों और छोटे व्यवसायों में महिलाओं को कई अवसर लाती है।

भारत में महिलाओं के लिए आईटी की क्षमता तकनीकी कौशल और शिक्षा के अपने स्तर पर अत्यधिक निर्भर है और वैश्विक पूल से जान तक पहुंचने की प्रमुख आवश्यकता है। सरकार और गैर सरकारी संगठनों को औपचारिक और अनौपचारिक शैक्षणिक प्रणालियों के एक हिस्से के रूप में और दूरस्थ शिक्षा और व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए आईटीके उपयोग पर तकनीकी शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। अन्य वर्गों और क्षेत्रों से महिलाओं के लिए पहुंच की सुविधा के लिए, इन मध्यस्थ संगठनों को स्थानीय संस्थानों में रणनीतिक रूप से स्थित होने की आवश्यकता है, जिनके लिए महिलाओं के पास खुली और समान पहुंच है, जैसे कि स्वास्थ्य केंद्र, महिला एनजीओ, महिला रोजगार केंद्र, पुस्तकालय, महिला अध्ययन विभाग और संस्थान, सामुदायिक केंद्र इत्यादि।

### संदर्भ

1. महिलाओं के लिए राष्ट्रीय नीति (2016), महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 9-13
2. निधि टंडन (2009), "महिला संचार-आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सूचना संचार प्रौद्योगिकी", विश्व बैंक, वाशिंगटन डीसी, 2009, पृष्ठ 12-13
3. नोड मिलर और पीटर सेनकर (2000), "प्रौद्योगिकी और असमानता: सूचना सोसाइटी पूछताछ", ब्रिटिश लाइब्रेरी कैटलॉगिंग प्रकाशन, लंदन, पृष्ठ 110-115
4. पलनिथुरई.जी (2001), "स्थानीय बॉडी लीडर के लिए क्षमता निर्माण", संकल्पना प्रकाशन हाउस, नई दिल्ली।

5. परमोद कुमार तिर्पाथी (2014), “कौशल विकास भारत: पहल का एक अवलोकन और योजनाएं”, कानिस्का प्रकाशक, नई दिल्ली, पृष्ठ 3-4
6. पूजा कटारिया (2009), महिला और मीडिया: बदलती भूमिकाएं, संघर्ष और प्रभाव”, रीगल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. प्रसाद पीएन और डॉ. वी। श्रीदेवी (2007), “सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण: एक भारतीय राज्य से एक केस स्टडी” अंतर्राष्ट्रीय महिला अध्ययन पत्रिका, पृष्ठ 115
8. प्रोमिला कपूर (2001), “भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाना”, संकल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली
9. राडवा ओगिगाबेन, एसई और इयामु, नाइजीरिया समस्याओं और संभावनाओं में माध्यमिक विद्यालयों में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करना”, शैक्षिक प्रौद्योगिकी और समाज, खंड 08, पीजी 104-112
10. रघुराजन.वाई (2011), “महिला कल्याण कार्यक्रम”, ओमेगा प्रकाशक, नई दिल्ली, पृष्ठ 96
11. रीना जल्दवाल कुली (2012), “महिला सशक्तिकरण”, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, पृष्ठ 3
12. राजेश। झा। (2004), “ई-पंचायत: पीआरआई को सशक्त बनाने में आईटी की भूमिका”, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

---

#### **Corresponding Author**

**Sunita Singh\***

Department of Sociology, Swami Vivekananda University, Sagar (MP)